आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2581 • उदयपुर, मंगलवार 18 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

झाँसी (उत्तरप्रदेश), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 जनवरी 2022 को महाराजा अग्रसेन सरस्वती इन्टर कॉलेज, झाँसी में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्त्ता श्री संजीव जी बुधौलिया अध्यक्ष श्रीराम कथा आयोजन समिति रहे। शिविर में 240 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 35, केलीपर माप 33, ऑपरेशन चयन 44 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री रवि जी शर्मा (विधायक महोदय), अध्यक्षता श्री रामतीर्थ जी सिंहल (महापौर महोदय), विशिष्ट अतिथि श्री पवनजी जी गौतम (अध्यक्ष जिला पंचायत झाँसी),श्री संजीव जी बुधौलिया (अध्यक्ष श्री रामकथा आयोजन समिति), श्री विद्या प्रकाश जी दुबे (पार्षद), श्रीमान बंटी जी राजा (सदस्य समिति), श्री संतोष जी गुप्ता (प्रधानाचार्य), डॉ नवीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन) केलीपर्स माप टीम सुश्री नेहा जी (पीएनडो), श्री भगवती जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री देवीलाल जी, श्री हरीश जी रावत, (सहायक), श्री हितेश जी सेन (रसीद), श्री आदित्य जी (ऐंकर) ने भी सेवायें दी।

कल्याण (महाराष्ट्र), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 जनवरी 2022 को सेंट लॉरेन्स स्कूल उपाजीधाम के सामने कल्याण में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्त्ता नव अंकुर बहुउद्देशीय सेवाभावी संस्था आयोजन समिति रहा। शिविर में 112 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 28, कैलीपर माप 07, ऑपरेशन चयन हेतु 14 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री विश्वनाथ आत्माराम जी भोईर (विधायक महोदय), अध्यक्षता श्री श्री प्रभुनाथ जी आत्माराम (नगर सेवक), विशिष्ट अतिथि श्री जयवंत जी दादा (नगर सेवक),सौ. वैशाली जी विश्वनाथ भोईर (नगर सेविका), श्री भारत सूर्यभाण जी राठौड़ (अध्यक्ष), श्री प्रकाश जी बाबू बुगडे (कोषाध्यक्ष), श्री विनोद जी राठौड़ (शाखा संयोजक नादेड़), डॉ विजय कार्तीक (ऑर्थोपेडिक सर्जन) कैलीपर्स माप टीम श्री अमित कुमार जी (पीएनडो), श्री किशन जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री बजरंग जी, श्री गोपाल जी (सहायक), श्री मुकेश जी सेन (आश्रम साधक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 23 जनवरी 2022 प्रातः 10.00 बजे से
श्री लोकमान्य तिलक कम्यूनिटी हॉल, तिलक नगर, इन्दौर, मध्यप्रदेश
अग्रवाल भवन, महाराजा अग्रसेन भवन, गांधी रोड, रेलवे स्टेशन रोड, देहरादून
सैनी धर्मशाला, सर्या मोहल्ला, जाजर रोड, रोहतक, हरियाणा
इस सम्मान समारोह में सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
+91 7023509999
+91 2946622222

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
रविवार 23 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान
फ्लोरेंस फिजियोथैरेपी एवं वैलनेस क्लिनिक बदलापुर पड़ाव जोनपुर, उ.प्र.
रुपाली डेवलपर्स प्रा. लि. काली चौरा, रैदपुर, आजमगढ़, उ.प्र.
चैन्नई, तमिलनाडु
कल्याण मण्डप, मेन रोड, सिमलीगुडा, उड़ीसा
इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।
+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

इंसान कैसे बड़ा बनता है?

एक जमाना था जब गाँव का कोई इन्सान रात को भी दुख से कराह देता था तो पास–पड़ोस के लोग उसको देखने, खैर खैरियत लेने के लिए, उसकी परेशानी को जानने के लिए अपने घरों से निकल कर उसकी तरफ दौड़ पड़ते थे। लेकिन इन्सान–इन्सान को पहचानता था। उसके दुख दर्द में काम आता था। मगर आज का नक्शा बदला हुआ है।

आज दुनिया बड़ी–बड़ी शिक्षा, बड़ी–बड़ी डिग्रियों का ज्ञान सीख रही है। नित नये–नये आविष्कार हो रहे हैं। लोगों की जिन्दगी में कामयाब होने का तरीका सिखाया जा रहा है। किस तरह दौलत हासिल होती है, ये गुण हासिल किया जा रहा है। नई–नई टैक्नालॉजी से इन्सान का ज्ञान बढ़ाया जा रहा है। उसे इन्टेलीजेन्ट बनाया जा रहा है। इससे इन्सान दिनोंदिन तरक्की कर रहा है।

सवाल यह है कि क्या इन्सानियत भी कहीं जिंदा है? क्या उसे भी पाला पोसा जा रहा है?

अगर नहीं तो वो ज्ञान बेकार है जो इन्सानों को तरक्की करना तो सिखाए मगर जिन्दगी गुजारने का तरीका न सिखाए।

आज लोग जो ज्ञान हासिल कर रहे हैं, उससे इन्सान मशीन बनता जा रहा है। उसके ऊपर माँ–बाप, भाई–बहन और पड़ोसियों का क्या हक है, क्या फर्ज है उसे मालूम नहीं। वो इन्सान के किसी भी दर्द को नहीं जानता, अपनों का दर्द नहीं समझता

आखिर इतने ज्ञान और नॉलेज का क्या मतलब? जो इन्सान को इन्सानी हमदर्दी न सिखाए।

आज दुनिया को सबसे ज्यादा खतरा पढ़े–लिखे लोगों से है। अनपढ़ किसान हल बनाकर बैल के जरिए खेतों में खेती करता है और देश व दुनिया के काम आता है।

वो बंदूक और बम नहीं बनाता, मगर पढ़े–लिखे और विकसित लोगों ने इन्सानों को तबाह व बर्बाद करने के लिए परमाणु बम जैसे खतरनाक हथियार बना लिए हैं। ऐसा नॉलेज आ जाने के बाद गुमराही के सिवा और क्या हो सकता है?

याद रखें–ऊँचा पद, धन, शिक्षा की लम्बी–चौड़ी डिग्रियाँ या रूतबा समाज व सरकार द्वारा पदवियाँ ये मनुष्य को बड़ा नहीं बना सकते। बड़ा बनाती है मानवता, दया, करुणा, सेवा परोपकार।

मल्लाह की सूझबूझ से यात्रियों की जान बची

एक नाव पूरी तरह यात्रियों से भरी थी। बीच मझधार से गुजरते ही मल्लाह की नजर पड़ी कि यात्रियों के पांव के बीच में नाग फन फैलाए बैठा है। यदि वह कहता कि नाव में नाग है तो यात्रियों में अफरा– तफरी मच जाती और संतुलन बिगड़ने से नाव एक तरफ झुककर डूब जाती, कई यात्री मर जाते।

मल्लाह ने धैर्य रखा व नाव को तेज गति से खेना चालू कर दिया देखते ही देखते नाव किनारे के नजदीक आने लगी, किन्तु नाग यात्रियों के नीचे से निकलकर मल्लाह के नजदीक आने लगा सभी यात्री नाग से बेखबर थे। किनारे पर नाव पहुंचते ही मल्लाह के पांव से नाग लिपट गया और मल्लाह चिल्लाया– नाग– नाग भागो भागो देखते ही देखते सब यात्री ने नाव से कूदकर अपने – अपने रास्ते पर चल दिये।

सबकी जान बचाने वाले के बारे में किसी ने नहीं सोचा। परन्तु उसके मुख पर अभी भी इस बात का संतोष था कि बीच मंझधार में धैर्य रखकर अपनी सवारियों की जान बचाने व उन्हें सकुशल पार लगाने के अपने दायित्व के निर्वहन में वह सफल हुआ। उसके सद्कर्म से यात्री नदी पार हुए और वह भवसागर के पार हो गया।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

ओ महिमा प्रेमदेवता महाराज।
करे सब हृदय हृदय में राज।।

प्रेमदेव महाराज की कथा। ये भगवान राम, मर्यादा पुरुषोत्तम की कथा। कोई विकार नहीं। रात्रि तक तय हुआ था कल प्रातःकाल शुभ मुहूर्त में राम भगवान का राजतिलक किया जायेगा। और रातोंरात मंदमति मंथरा। ऐसे मंदमति मंथरा कोई बनना मत– भैया। और आपके पास में सगे– सम्बन्धी हो तो सावधान रहना।

एक बहन ने परसों फोन किया– बाबूजी मुझे केन्सर हो गया था। किमोथेरेपी ली मैंने, ट्रिटमेंट किया। मेरा केन्सर दूर भी होने लग गया। लेकिन परसों ही मेरी जेठानी ने फोन किया– अरे! तेरे तो बाल उड़ गये। तेरे बाल, अच्छे नहीं लगते। उड़े हुए बाल। तो तेरे बाल वापस काले–काले आ जायेंगे तब मैं तेरे से मिलने आऊंगी। बाबूजी मेरी तो रात की नींद उड़ गयी। अरे! ऐसी जेठानी? केवल बालों के प्रति प्रेम था– क्या? प्रेम तो आत्मा से होता है। प्रेम शरीर से नहीं होता। ये बाल जब शरीर से अलग हो जाते हैं, और यदि मुँह में आ जावे, सब्जी में तो थू थू करने लग जाते हैं। और कहते हैं– अरे! ये बाल कैसे आ गया? ये नाखून कैसे आ गया? ये दांत की हड्डी का टुकड़ा कैसे आ गया?

जब तक हमारे देह देवालय में सब सम्पुश्ट है। लगे हुए हैं। केवल देह देवालय का, एक बटा सोलहवां हिस्सा स्कीन का ये। ये पूरे – पूरे देह देवालय पे शरीर का सबसे बड़ा अंग स्कीन।

सम्पादकीय

एक प्रसिद्ध कवि ने बहुत ही प्रेरक गीत लिखा है– सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा। इसके पीछे अनेक प्रकार की भावात्मक बातें है हमारा मुल्क हमारे लिये सर्वश्रेष्ठ तो होता ही है, किन्तु कई ऐसी विशेषतायें भी हैं जो भारत को विश्व के अन्य देशों से अलग व श्रेष्ठ सिद्ध करती है। यह अपना ही देश है जहाँ विश्व के लगभग सभी धर्मों के अनुयायी रहते हैं। न केवल रहते हैं वरन उनका सामाजिक ताना बाना भी सुदृढ़ है। सर्वधर्म समभाव के वाक्य को चरितार्थ होता देखना हो तो यहां है। ज्ञान और विज्ञान का समन्वय यहां सदियों से हैं। विज्ञान को भौतिक व ज्ञान को आध्यात्मिक उन्नति का आधार माना गया है। ज्ञानी और विज्ञानी को यहाँ समान सम्मान मिलता रहा है। यहां की एक और परम उपलब्धि है कि भारतीय संस्कृति ने सभी संस्कृतियों को आत्मसात् किया है। हरेक धर्म व संस्कृति को पूरा सम्मान दिया है। सबके कल्याण का भाव भी यहीं दिखाई देता है। इसलिये तो जहां से अच्छा है हमारा देश।

कुछ काव्यमय

कोई भी देश
केवल भूमि का खण्ड
नहीं होता है।
वह अपने निवासियों को अपनी
गरिमा, संस्कृति और
भावनाओं में भिगोता है।
अपने देश को इसमें महारत है।
इसलिये सबसे ऊँचा भारत है।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

प्रेम का रिश्ता

सीढ़ियों से होकर मन्दिर पर पधारे तो साध्य हमारा मन्दिर जी के दर्शन नहीं है। साध्य परमात्मा की कृपा प्राप्त करनी है। साध्य कृष्ण है। भगवान को कितना ज्ञानी कहते है विश्व गुरु, योग गुरु, जगत गुरु, पूरे ब्रह्माण्ड के गुरु तो ऐसे हमारे कृष्ण भगवान से हम ये प्रार्थना करें कि गिरिराज पर्वत उठाये तो अकेले भगवान ने उठाया था–अपनी अंगुली पर। लेकिन लोग साथ आते गये किसी की लकड़ियाँ निहाल हो गयी। किसी के हाथ निहाल हो गये। किसी के कन्धे निहाल हो गये। किसी के पंजे निहाल हो गये। आप और हमारे पर परमात्मा पर बड़ी कृपा है।

शांति क्रांति कल्याण जगत में।
सृजन प्रलय का खेल
प्रगति बिन
पच्चीस से मिल जा।

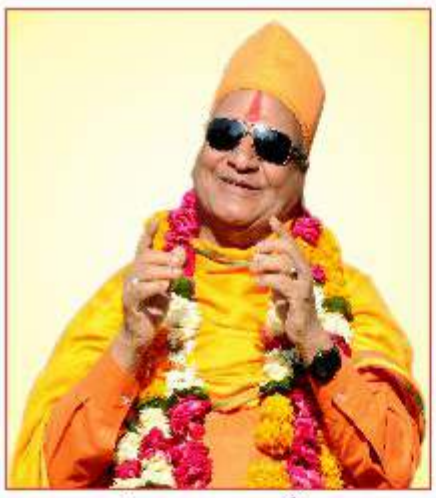

पंच तत्व का मेल
यहाँ खिल जा।।

मैंने तो यह पाया बाबूजी। कभी–कभी आदमी कहता है अरे ! आपको मालूम नहीं कितना पसीना बहाता हूँ? दूकान पर कितनी मेहनत करता हूँ? कारखाने में कितना परिश्रम करता हूँ? लेकिन हो सकता है आपकी पूज्य माताश्री, आपके पूज्य मामी श्री आपकी धर्मपत्नी जी, आपकी बेटी, आपकी भुआ जी आपके दादा जी, आपकी ताईजी की वजह से आपका पसीना भी सफल हो रहा हो। क्योंकि कहते है कि ये घर है ना किसी एक की तपस्या से चल रहा है केवल मेहनत से नहीं चलता है। बाबूड़ा आप और हमारा बचपन याद करें। कल भी लगेगा पिताजी ने कहा होगा, अरे! घर छोड़कर मत जाना।

ताऊजी कितना भी गुस्सा कर दे। इस जाजम को मुठ्ठी में पकड़े रखना। कभी आपकी माताजी ने कहा होगा। देख तेरे पिताजी से बहसबाजी मत किया कर। लाला तूं मेरा लाड़ला लाला है। पिताजी ने तेरे लिए कितना त्याग किया रे? पिताजी ने तेरे लिए बहुत त्याग किया। रिश्ते निमायें। ये रिश्ते निमाना कोई साधारण काम नहीं है। इस धर्म को नहीं भाई रिश्ता निभाना है। प्रेम से रिश्ता निभाना है–ज्ञान से।

–कैलाश 'मानव'

केवल अच्छाई अपनायें

एक बहुत ही सज्जन और सुशील व्यक्ति था। एक दिन एक आदमी उसके सामने आकर उसे अपमानित करने लगा, अपशब्द कहने लगा। लेकिन उस सज्जन व्यक्ति ने कोई जवाब नहीं दिया, और मुसकरा कर आगे बढ़ने लगा।

इस पर भी उस दुर्जन व्यक्ति का क्रोध शांत नहीं हुआ, और वह निरन्तर अपशब्दों की बौछार करता रहा, किंतु तब भी उस सज्जन व्यक्ति की मुसकुराहट कम नहीं हुई तो उस दुर्जन आदमी को और अधिक गुस्सा आ गया। उसने उस सद्गुणी पुरुष को और भी अधिक कटु वचन कहे, यहाँ तक कि उसके माता– पिता तक के

विषय में भी अपशब्द कहे। लेकिन इतने पर भी उस संभ्रांत व्यक्ति को ज़रा–सा भी क्रोध नहीं आया, और केवल मुसकुराता रहा।

आखिरकार वह असभ्य आदमी झल्लाता हुआ वहाँ से चला गया। उस सज्जन व्यक्ति के साथ उसका मित्र भी था। इस पूरी घटना को देखकर उससे रहा नहीं गया, और बोला कि ये तुमने क्या किया? उस आदमी ने तुम्हें इतना अपमानित किया, फिर भी तुम मुसकुराते रहे, तुमने उसे कुछ कहा क्यों नहीं? सज्जन व्यक्ति ने मित्र से कहा– तुम मेरे साथ, मेरे घर चलो। घर जाने के बाद वह मित्र को आदर से बिठा कर एक कमरे के अंदर चला जाता है। थोड़ी देर वह अपने हाथ में कुछ मैले–कुचैले वस्त्र लिए कमरे से बाहर आता है, और अपने मित्र से कहता है कि लो इनको पहन लो। मित्र ने हैरान होते हुए कहा– इन मैले वस्त्रों को मैं कैसे पहन सकता हूँ? इनमें से तो बदबू आ रही है।

वह सज्जन व्यक्ति उन्हें फेंक देता है, और कहता है कि तुम जिस तरह अपने स्वच्छ वस्त्रों को छोड़ कर मैले–कुचैले, गंदे वस्त्र नहीं पहन सकते, वैसे ही मैं भी किसी अनजान और असभ्य व्यक्ति के मैले– कुचैले अपशब्दों और अपमान को अपने जीवन में स्थान नहीं दे सकता। मैं अपने जीवन में अच्छे वस्त्र त्यागकर मैले–कुचैले वस्त्र कैसे पहन सकता हूँ? मैं ऐसे अच्छे विचारों को त्यागकर गंदी बातों को अपने जीवन में कैसे अपना सकता हूँ?

इसलिए हमें भी जीवन में कभी अपनी अच्छाइयों को छोड़कर, दूसरों की बुराई को नहीं अपनाना चाहिए। यदि कोई हमें आहत या अपमानित करने का प्रयास करे तो अपने आप को चंदन के उस वृक्ष की तरह बना लो, जो जहरीले साँपों से घिरा रहकर भी उनके ज़हर को धारण नहीं करता।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झिनी–झिनी रोशनी से)

गंगोत्री का जल ग्लेशियर से आ रहा है, ऊपर गोमुख है, गो मुख के ऊपर तपोवन है। तपोवन के प्रति कैलाश का बहुत आकर्षण था। यही वह स्थान था जहां शांतिकुंज हरिद्वार के संस्थापक पं. श्री राम ने 24 साल तक अनूठी तपस्या की थी। आचार्य यहां गाय को जौ खिलाते थे तथा उसके गोबर से वापस निकलने वाले जौ को एकत्र कर सुखाते थे। इसके पश्चात् इसके आटे से रोटी बनाकर छाछ के साथ ग्रहण करते थे। 24 वर्षों तक उन्होंने यही किया। ऐसी पावन भूमि का स्मरण कर कैलाश धन्य हो गया। यहां भी पूजा–अर्चना–स्नान– ध्यान किया और लौट आये। मौसम खराब हो गया वरना यहां से केदारनाथ जाने की भी उसकी इच्छा हो गई थी जो पूरी नहीं हो पाई।

2005 में कम्प्यूटर प्रशिक्षण शुरू किया। कैलाश की मान्यता थी कि जमाने की धारा के साथ चलना जरूरी है। बांसवाड़ा में रहते हुए उसने कम्प्यूटर चलाना कुछ कुछ सीख लिया था। उदयपुर में जब पहला कम्प्यूटर खरीदा तो उसने भी मन लगाकर अच्छी तरह सीख लिया। वह चाहता था कि किसी से भी कम्प्यूटर का काम करवाया जाये तो उसका न्यूनतम ज्ञान उसे स्वयं भी होना चाहिये। कम्प्यूटर कक्षाएं अत्यन्त सफल रहीं। इस कार्य में प्रशान्त का सक्रिय सहयोग रहा। कई रोगियों के एक पैर का ऑपरेशन हो जाता, मगर दूसरे पैर के ऑपरेशन मे 40 दिन का अन्तराल होता। इस अवधि में उस रोगी को कम्प्यूटर का प्रशिक्षण मिला जाता तो उसके लिये बहुत लाभकारी होता। 40 दिन उसे यहीं रहना होता था, घर तो वापस नहीं जा सकता था। इसी तरह टी. वी तथा वी.सी.आर. ठीक करने का कार्य भी सिखाना शुरू कर दिया। यह ऐसे जनोपयोगी कार्य थे जिन्हें सीख कर कोई भी, कहीं भी कमा–खा सकता था। रोगियों के लिये विशेष तरह का फर्नीचर बनवा लिया जिससे वह अपना प्लास्टर में बंधा एक पांव आरामी से रख कर ये विद्याएं सीख सकता था। उन दिनों मोबाइल फोनों का चलन भी बढ़ता जा रहा था, किसी ने सलाह दी कि इसका भी प्रशिक्षण शुरू कर दो तो मोबाइल फोन ठीक करना भी सिखाने लगे।

अंश - 211

विपरीत समय में भी विनम्र बने रहना चाहिए

एक लोक कथा के अनुसार पुराने समय में गुरु अपने शिष्य के साथ यात्रा कर रहे थे। यात्रा के दौरान उन्हें पहाड़ियां पार करनी थी। रास्ते में गहरी खाई भी थी। अचानक शिष्य का पैर फिसला और वह खाई की ओर गिरने लगा। तभी उसने एक बांस को पकड़ लिया। शिष्य के वजन की वजह से बांस धनुष की तरह मुड़ गया था। लेकिन, बांस टूटा नहीं। लटके हुए शिष्य को बचाने के लिए गुरु प्रयास कर रहे थे। किसी तरह गुरु ने शिष्य का हाथ पकड़ कर उसे बाहर निकाल लिया। बाहर निकलने के बाद गुरु और शिष्य अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए। गुरु ने शिष्य से कहा कि क्या तुमने वह बात सुनी जो बांस ने कही थी?

शिष्य ने कहा कि नहीं गुरुजी, मैंने ध्यान नहीं दिया। मुझे पेड़–पौधों की भाषा भी नहीं आती है। आप ही बता दीजिए बांस ने जो कहा था। गुरु ने कहा कि बांस ने हमें सुखी जीवन का एक महत्वपूर्ण सूत्र बताया है। जब तुम खाई में गिर रहे थे, तब बांस ने तुम्हें बचाया। वह मुड़ गया था, लेकिन टूटा नहीं। उस रास्ते में बांस के कई पौधे उग रहे थे। गुरु ने एक बांस को पकड़कर नीचे खींचा और फिर से छोड़ दिया। बांस फिर से सीधा हो गया। गुरु ने शिष्य से कहा कि हमें बांस का यही लचीलापन अपने स्वभाव में भी उतारना चाहिए। जब तेज हवा चलती है, आंधी–तूफान आते हैं तो बांस विनम्र होकर पूरा झुक जाता है और तेज हवा में भी उखाड़ता नहीं है। जमीन में मजूबती से अपनी पकड़ बनाए रखता है। ठीक इसी तरह हमें भी अपने स्वभाव में विनम्रता बनाए रखनी चाहिए। जीवन में जब भी हालात विपरीत हो जाए तो गुस्से से बचें और विनम्रता का गुण न छोड़ें। सही समय की प्रतीक्षा करें और जब सब ठीक हो जाए, हमें फिर से अपनी जगह पर पहुंच जाना चाहिए।